कुलगीत

तपोभूमि यह ऋषि मुनियों की अति पावन अभिराम
विद्या के आलोक पुंज को शत शत बार प्रणाम.....

यहाँ नर्मदा की लहरों में संस्कृति का अनुप्रास
यह भारत की अमर संपदा का पूरा इतिहास
यह स्कंदपुराण निरूपित अद्भुत रेवाखण्ड
युग युग से महिमामंडित यह वंदित और अखंड
जनजातीय समाज यहाँ पर कर्मशील निष्काम
विद्या के आलोक पुंज को शत शत बार प्रणाम.....

यहाँ नर्मदा, सोन, जोहिला और अरण्डि प्रवाहित
विद्या की देवी की पावन वीणा यहाँ स्वरासित
आदि शंकराचार्य, कपिल ने यहीं किया था ध्यान
साधक, संत, कबीर पा रहे प्रज्ञा का वरदान
यहीं विश्व की मानवता को मिल पाता विश्राम
विद्या के आलोक पुंज को शत शत बार प्रणाम.....

यहाँ सुलभ है जनजीवन की परिपाटी का ज्ञान
भारत की भाषा परिभाषा का अद्भुत अनुमान
यहाँ सूक्ष्म स्थूल दीखता, कण–कण ऊर्जावान
मेघदूत सर्वदा निहारे साल, चीड़, वट, आम
सदा अमरकण्टक में गुंजित दिव्य सदाशिव नाम
विद्या के आलोक पुंज को शत शत बार प्रणाम.....

इस अंचल से जुड़ी हुई हैं जन–जीवन की आशा
पूर्ण करेगा विद्यासागर जन–जन की अभिलाषा
वन औषधि की प्रचुर संपदा का यह सुंदर कोष
संस्कृति और जीवन मूल्यों का यह करता उद्घोष
यहाँ सिद्धि की सतत चेतना बहती है अविराम
विद्या के आलोक पुंज को शत शत बार प्रणाम.....

यह धर्म भूमि, यह कर्म भूमि, जीवन दर्शन की मर्म भूमि
यह ज्ञान भूमि, यह ध्यान भूमि, यह सतत् लक्ष्य संधान भूमि
यह बोध भूमि, यह शोध भूमि, यह "चरैवेति" अनुरोध भूमि
यह तत्व भूमि, यह सत्व भूमि, यह मेधा की अमरत्व भूमि
गुप्त नर्मदा से अभिसिंचित विश्व विदित गुरुधाम

तपोभूमि यह ऋषि मुनियों की अति पावन अभिराम
विद्या के आलोक पुंज को शत शत बार प्रणाम.....

प्रो० श्रीप्रकाश मणि त्रिपाठी